शुभमस्तु श्रीरस्तु अविघ्नमस्तु

यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म यज्ञौ वै विष्णुः यज्ञाः कल्याण हेतवः

चतुर्थाग्नि युक्त समूढ पौण्डरीक महायागम्

पौण्डरीकमृद्धिकामः

समय: फाल्गुण शुक्ल सप्तमी (सा.श. 16.03.2024) से चौत्र शुक्ल चतुर्दशी (सा.श. 22.04.2024) तक

याग स्थल:पेदवाडपल्लि, कोव्वूरु (पश्चिम गोदावरी जिला, आन्ध्रप्रदेश)

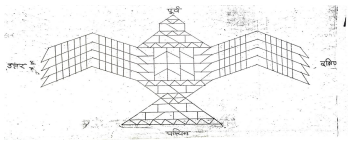

सभी आस्तिकों को सादर

आह्वान

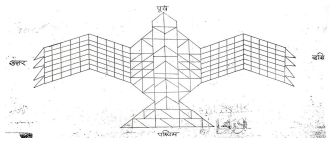

श्री शृङ्गेरी शारदा पीठम् के उभय जगद्गुरुओं के आशीर्वाद से, अवधूत दत्त पीठम्, मैसूरु के, श्री पुष्पगिरि पीठम् के, उडुपी पेजावर अधोक्षज मठ के, श्री कूडली शृङ्गेरी महासंस्थानम् के पीठाधीश्वर और श्री गोवर्द्धन मठ पुरी के शङ्कराचार्य जी के समक्ष विनम्र निवेदन कर के और कलियुग दैव श्री तिरुमल वेङ्कटेश्वर स्वामी के आशीर्वाद और काञ्ची कामकोटि पीठ के पीठाधीश्वर के अनुग्रह से

यजमान ब्रह्मश्री देंदुकूरि वेङ्कटेश्वर दीक्षितुलु (घनपाठी,व्यूढ पौण्डरीक याजिन्)

(आहिताग्नि जो कि अनेक सोमयागों को अनुष्ठित कर चुके हैं जिसमें सप्त सोम संस्थाओं के साथ साथ द्विषाहस्र, त्रिषाहस्र चयनों पर व्यूढ पौण्डरीक, महाव्रत महायाग भी हैं)

अपने गुरु ब्रह्मीभूत सद्गुरु श्री श्री ज्ञानानन्द तीर्थ स्वामी जी के आशय पूर्ति के हेतु उनके शत जयंती के संदर्भ में कलियुग में करने योग्य सबसे विस्तृत सोमयागों में से एक और जिस महायाग को हम श्रीमद्वाल्मीकि रामायण से जानते हैं कि धर्मस्वरूप **श्रीराम** जी ने अनेक बार अनुष्टान किया हो[1] - उस **पौण्डरीक महायाग** को **समूढ** रीति में **चतुर्थाग्नि** (चतुर्थ अग्निचयन – श्येन आकार में (गरुड जैसा) 3000 इष्टकों (ईंट) से बनता है) पर लोक कल्याणार्थ – सार्वजनिक रीति से अष्टैश्वर्य संपदा के वृद्धि के लिये

समय	फाल्गुण शुक्ल सप्तमी (सा.श. 16.03.2024) से चौत्र शुक्ल चतुर्दशी (सा.श. 22.04.2024) तक
यागस्थल	अखंड गोदावरी तट पर पेदवाडपल्ली ग्राम (आन्ध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले के कोव्वूरु-निडदवोलु रस्ता पर) में

करने का सङ्कल्प रामराज्य के तरह की सुशासन के लिये किये हैं । इस संदर्भ में

सभी आस्तिक महाशयों से निवेदन

है कि वे यह जानकर कि - *यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म* (मनुष्य करने लायक सबसे श्रेष्ठ कर्मों में भी श्रेष्ठ यज्ञ है) और उन यज्ञों में भी देवता प्रीति के लिये करने वाले सोमयाग (जिसमें देवताओं को सोम लता का रस अग्निहोत्र द्वारा दिया जाता है) श्रेष्ठ है और उन सोमयागों में भी कलियुग में सर्वश्रेष्ठ पौण्डरीक (एकादश रात्र) माना गया है जिसमें ग्यारह दिन सोमरस की निवेदन होता है। पौण्डरीकमृद्धिकामः (आश्वलायन श्रौतसूत्र 10.4.1) - सर्व विध ऋद्धि के लिये पौण्डरीक याग का अनुष्ठान करें । पौण्डरीक याग दो तरह की है - व्यूढ और समूढ। व्यूढ रीति में सा.श. 1994 में पौण्डरीक याग का अनुष्ठान करके, तीस वर्ष के बाद 71 वर्ष के आयु में समूढ रीति में अनुष्ठान करने का सङ्कल्प लिये ये यजमानश्री विश्व के सबसे श्रेष्ठ याग दीक्षितों में से एक हैं । हम सभी का सौभाग्य है कि यजमानश्री हम सभी के ऋद्धि कामनार्थ इस यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे हैं। इस याग में यथाशक्ति सहाय-सहकार अपने अङ्ग-अर्थ-वाक्-तपो बल के द्वारा, दान – स्वर्ण-आज्य-वस्त्र-धन-धान्य के रूप में, अन्नसमाराधना के द्वारा करके यज्ञेश्वर की अनुग्रह पात्र बनें।

---

1 पौण्डरीकाश्वमेधाभ्याम् वाजपेयेन चासकृत् । अन्यैश्चविविधैर्यज्ञैः अयजत् पार्थिवर्षभः ॥ -श्रीमद्वाल्मीकि रामायण श्लो.सं. 6.128.95

कार्यक्रम

फाल्गुण शुक्ल सप्तमी (सा.श. 16.03.2024) से चैत्र शुक्ल चतुर्दशी (सा.श. 22.04.2024) तक

शनिवार, सा.श. 16.03.2024, फाल्गुण शुक्ल सप्तमी	गुरुवन्दन – गणपति पूजा - याग सङ्कल्प – त्रैधातवीयेष्टि - ऋत्विग्वरणम् - मधुपर्क – उखासंभरणम् - वायव्य याग – प्रवर्ग्य (घर्म्य) संभरणम् - दीक्षाधारणम् - उख्याग्नि संपादनम् - सनीहारम्
शनिवार, सा.श. 16.03.2024 से बुधवार सा.श. 27.03.2024 तक – द्वादश दिन याग दीक्षा	उख्याग्नि धारणम्
बुधवार सा.श. 27.03.2024 सायं समय	यागशाला प्रवेश
गुरुवार, सा.श. 28.03.2024	गार्हपत्येष्टिका निर्माण – उपधानानि - प्रायणीय याग – सोमक्रयण – आतिथ्य याग – अग्निमान – सुवर्ण रुक्मादि उपधानानि - पुरुष सूक्त ध्यान – इष्टकोपधान आरम्भ
गुरुवार सा.श. 28.03.2024 से सोमवार सा.श. 08.04.2024 तक – द्वादश दिन	इष्टकोपधानानि
सोमवार सा.श. 08.04.2024	चरमेष्टका (ईंठ) पर रुद्रहोम – चमक – वैश्वानरेष्टि - अग्नीषोमीय याग - वसतीवरीग्रहण
मङ्गलवार सा.श 09.04.2024 से रविवार सा.श.14.04.2024 तक	सुत्याहस् आरम्भ – षडहं - (प्रथमाहस् - युगादि के दिन – चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)- हर दिन सौम्यचरु (यज्ञ पायस)
सोमवार सा.श. 15.04.2024 से बुधवार सा.श. 17.04.2024 तक	छन्दोमांश्च (24 + 44 + 48) - हर दिन सौम्यचरु
गुरुवार सा.श. 18.04.2024	गोतम चतुष्टोम - सौम्यचरु
शुक्रवार, सा.श. 19.04.2024	विश्वजित् अतिरात्र याग - सौम्यचरु
शनिवार, सा.श. 20.04.2024	आश्विन शस्त्र – अवभृथ स्नान – उदयनीय – आमीक्षा - पात्नीवत याग – गृहप्रवेश – वैष्णवी पूर्णाहुति - प्रकृति - पुनः त्रैधातवीयेष्टि
रविवार सा.श. 21.04.2024	सौत्रामणि - अवभृथ स्नान
सोमवार, चैत्र शुक्ल चतुर्दशी, सा.श. 22.04.2024	वेद सभा - आशीर्वचन

यागानुष्ठान के समय यागशाला के बाहर के जगह में यज्ञ विशेष को बताने के साथ अनेक धार्मिक-सास्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करने का प्रयास है । यज्ञ के बाद – जो श्येन चिति रहता है - उस पर गरुडारूढ रीति में दिखने वाला श्रीमहाविष्णु (श्रीकृष्ण) के विग्रह की स्थापना कर एक मंदिर जैसा बनाने की भावना है। इस यज्ञानुष्ठान में सहायता देने वाले सभी भक्तों का नाम इस मंदिर के प्रहरी पर उल्लिखित कर - इसे यज्ञस्मारक - कह सकते हैं ।

चतुर्थाग्नि युक्त समूढ पौण्डरीक याग सेवा समिति , धर्माधारा ट्रस्ट् (www.dharmadhara.org/cspyaga)

यज्ञ संपन्नार्थ दान करने की इच्छुक लोगों के लिये जानकारी: BANK A/c Name: DHARMADHARA Current A/c Number: 50200084134150 IFSC: HDFC0000562 BRANCH: BARKATPURA (or) UPI: 7093125081@hdfcbank
अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें: +91 9908209173 (Signal) / +91 7382990835 (WhatsApp)

सभी दाताओं से विनति है कि दान देने के बाद ऊपर देये गये संपर्क पर जानकारी दें ।

॥ कर्ता कारयिता चैव प्रेरकश्चानुमोदकः । सुकृते दुष्कृते चैव चत्वारः समभागिनः ॥